PATNA WOMEN'S COLLEGE AUTONOMOUS 1940

Hindi
Explore–Journal of Research
ISSN 2278 – 0297 **(Print)**
ISSN 2278 – 6414 **(Online)**
UGC Approved List of Journals No. - 64404
© Patna Women's College, Patna, India
http://www.patnawomenscollege.in/journal

हिंदी के विविध रूप

• अदिती कुमारी • काजल कुमारी • गिन्नी कुमारी
• दीपा श्रीवास्तव

Received : November 2018
Accepted : March 2019
Corresponding Author : Deepa Srivastava

Abstract : हिंदी मातृभाषा, राजभाषा, संपर्कभाषा एवं साहित्यिक भाषा होने के साथ-साथ तकनीकी, कार्यालयी, विज्ञान और वाणिज्य की भाषा भी बन गई है। वर्तमान परिवेश में यह बाजार की भी भाषा है और विदेशों में भी इसका प्रचार-प्रसार है।

भाषा जितने विषयों के लिए प्रयुक्त होती है, उतने ही स्वरूप या विविध रूप उभरकर आते हैं। हिंदी का स्वरूप भी ऐसा ही है।

भारतीयों को भारतीयता और मानव-मानव को आत्मीयता से जोड़ने वाली हिंदी के भी विविध रूप हैं जो एक-दूसरे के पूरक हैं और हिंदी के शब्द-भंडार को समृद्ध बनाने में सहायक हैं। वे हैं- मानक हिंदी, बोलचाल की हिंदी, वाणिज्य-व्यापार की हिंदी, कार्यालयी हिंदी, शास्त्रीय हिंदी, साहित्यिक हिंदी, संसदीय हिंदी, खेलकूद की हिंदी, जनसंचारीय हिंदी, सामाजिक संचार माध्यमों की हिंदी इत्यादि।

इंटरनेट पर भी हिंदी का प्रयोग उत्तरोत्तर बढ़ता जा रहा है। लेकिन ऐसा नहीं है कि हिंदी के विकास का मार्ग निष्कंटक रहा है। इसके बदलते स्वरूप के साथ अनेक समस्याएँ भी उभरकर सामने आई हैं, जिनके समाधान के लिए दृढ़ संकल्प और सतत प्रयास की आवश्यकता है। आज समय की माँग है कि भाषायी आधार पर हो रहे भारत के विभाजन का उन्मूलन कर देश की सांस्कृतिक एकता को मजबूत किया जाए और इस कार्य का सफल संपादन सिर्फ और सिर्फ हिंदी ही कर सकती है।

संकेत शब्द (Keywords) : हिंदी, संपर्कभाषा, विविध रूप, सांस्कृतिक एकता।

अदिती कुमारी
बी० ए०-तृतीय वर्ष (2016-2019), हिन्दी (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

काजल कुमारी
बी० ए०-तृतीय वर्ष (2016-2019), हिन्दी (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

गिन्नी कुमारी
बी० ए०-तृतीय वर्ष (2016-2019), हिन्दी (प्रतिष्ठा),
पटना वीमेंस कॉलेज, पटना विश्वविद्यालय, पटना, बिहार, भारत

दीपा श्रीवास्तव
असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, पटना वीमेंस कॉलेज,
बेली रोड, पटना – 800 001, बिहार, भारत
E-mail : deepsri24@gmail.com

भूमिका :

भाषा समाज की आधारशिला होती है। यह मानसिक संकल्पना, सामाजिक यथार्थ और संप्रेषण की इकाई होने के साथ-साथ राष्ट्रीय प्रतीक भी है। किसी भी राष्ट्र की भाषा उस राष्ट्र की सांस्कृतिक चेतना और साहित्यिक परम्परा का संवाहक होती है।

हिंदी हमारी मातृभाषा, राजभाषा एवं संपर्कभाषा है। यह साहित्य की भाषा होने के साथ-साथ तकनीक, विज्ञान, वाणिज्य और बाजार की भाषा भी बन गई है। विदेशों में भी इसका प्रचार-प्रसार है। जनसंचार के माध्यमों का तीव्र गति से विकास होने के उपरांत यह सबसे लोकप्रिय भाषा बन गई है। यह एक जीवित और सशक्त भाषा है। इसने अन्य भाषाओं की ध्वनियों और शब्दों को अपने अंदर आत्मसात कर अपने